



सुशील कुमार जैन

संगीत नाटक अकादेमी अमृत पुरस्कार:
हिंदुस्तानी वाद्य संगीत (तबला)

SUSHIL KUMAR JAIN

Sangeet Natak Akademi Amrit Award:
Hindustani Instrumental Music (Tabla)

पंजाब के रोपड़ (वर्तमान रूपनगर) में 10 सितंबर 1946 को जन्मे, श्री सुशील कुमार जैन कला स्नातक हैं। आपने नौरता राम मोहन (पंजाब घराना), लक्ष्मण सिंह (पंजाब घराना), इकबाल मोहम्मद खान (पंजाब घराना), और बनवारी लाल मुल्तानी (किराना घराना) के संरक्षण में तबला वादन का प्रशिक्षण प्राप्त किया है। आपने गायन भी सीखा है।

भातखंडे संगीत महाविद्यालय, लखनऊ जैसे प्रतिष्ठित संगीत संस्थानों में आपने प्रशिक्षण कार्य किया है। बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय में आपने कार्यशाला आयोजित की है। आप इन दिनों तबला और पखावज कला के विकास पर हिन्दी और संस्कृत भाषा में एक पुस्तक रचना में व्यस्त हैं। पेशे से बैंक कर्मचारी, श्री सुशील जैन ने अपनी और पारम्परिक, लगभग 2000 रचनाओं का प्रलेखन किया है, जिनमें से कई ताल वाद्य के दुर्लभ पक्षों को उद्घाटित करती हैं।

हिंदुस्तानी वाद्य संगीत (तबला) में योगदान के लिए श्री सुशील कुमार जैन को संगीत नाटक अकादेमी अमृत पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

Born on 10 September 1946 in Ropar (present Rupnagar) of Punjab, Shri Sushil Kumar Jain is a graduate in Arts and has trained in tabla under the tutelage of Naurata Ram Mohan (Punjab Gharana), Laxman Singh (Punjab Gharana), Iqbal Mohammad Khan (Punjab Gharana), and Banwari Lal Multani (Kirana Gharana). He has also trained in vocal music.

Shri Jain has been imparting training at some reputed centres of music such as the Bhatkhande College of Music, Lucknow. He has also conducted workshop at Maharaja Sayajirao University of Baroda. He is engaged in writing a book on the evolution of the art of Tabla and Pakhawaj, both in Hindi and Sanskrit. A bank employee by profession, Shri Sushil Jain has documented nearly 2000 compositions, both traditional as well as his own, many of which touch upon rare aspects of Taal Vadya.

Shri Sushil Kumar Jain receives the Sangeet Natak Akademi Amrit Award for his contribution to Hindustani instrumental music.